"सबसे प्रीति-पूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए"—महर्षि दयानन्द सरस्वती

मासिक पत्रिका जुलाई—2013

॥ ओ३म् ॥

आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश -1 (पंजी.)

ARYA SAMAJ KAILASH-GREATER KAILASH-I (Regd.) Regn. No. 3594/1968

Greater Kailash - I, New Delhi-110048 ✆ 29240762, 29230831 • Email : samajarya@yahoo.in

An ISO 9001:2008 Certified

राम कृष्ण तनेजा	दीनानाथ ग्रोवर	एम.एम. सेठ
प्रधान	मंत्री	कोषाध्यक्ष

आर्यसमाज की विचारधारा *(क्रमशः)*

(लेखक-स्व. श्री क्षितीश वेदालंकार-आर्यसमाज ग्रे.कै.-1 की रजत जयन्ती के अवसर पर)

राजनैतिक विचारधारा (Contd.) - आधुनिक भारतीय राजनीति के संदर्भ में एक बात की ओर ध्यान दिलाना अत्यन्त आवश्यक है। अहिंसा के आदर्श से अनुप्राणित भारत सरकार कभी-कभी ऐसे मानसिक व्यामोह का परिचय देती है जो राष्ट्र-रक्षा के लिए सर्वथा घातक होता है। जहाँ हिंसा का प्रयोग परम कर्त्तव्य होता है वहाँ तो वह अहिंसा की दुहाई देती है, और जहाँ केवल सामान्य सद्बुद्धि और सूझ-बूझ से काम चल सकता है वहाँ वह हिंसा का आश्रय ले बैठती है। 'यथायोग्य व्यवहार' केवल धर्म का ही निर्देशक सूत्र नहीं है, प्रत्युत राजनीति का भी निर्देशक सूत्र है। देश पर आक्रमण करने वाले आततायियों और आतंकवादियों के साथ, राष्ट्रद्रोही, पंचमार्गियों के साथ और भ्रष्टाचारी अधिकारियों के साथ दया की नीति बरतना उसी राजनीतिक व्यामोह का परिणाम है। "दण्डः शास्ति प्रजाः सर्वाः **दण्ड एवाभिरक्षति, दण्डः सुप्तेषु जागर्त्ति दण्डं धर्म विदुर्बुधाः।**"-मनुस्मृति का यह ऐसा वचन है जिसका पालन न करने से राष्ट्र की अपरिमित क्षति होती है। अदण्ड्य को दण्ड देना और दण्ड्य को दण्ड न देना स्वयं दण्डनीय अपराध है। जो राजा इस बात का ध्यान नहीं रखता वह प्रजा की रक्षा करने में समर्थ नहीं होता। साधुओं का परित्राण और असाधुओं का विनाश-दोनों समानुरूप से आवश्यक हैं। राजनीति का यही सार है।

आर्थिकविचारधारा

जिस प्रकार आर्यसमाज राजनीति में स्वराज्य का, संस्कृति में स्वभाषा का, धर्म में स्वधर्म (वेद) का समर्थक है, वैसे ही अर्थनीति में स्वदेशी का समर्थक है। यदि विदेशी राज्य, विदेशी भाषा, और विदेशी धर्म अवाञ्छनीय हैं तो विदेशी वस्तुएँ भी अवाञ्छनीय हैं। आर्यसमाज की यह भावना विदेशियों के साथ शत्रुता के कारण नहीं है, परन्तु प्रत्येक क्षेत्र में 'स्व' का समर्थन ही आर्यसमाज का राष्ट्रवाद है। स्वदेश में ही अगर विदेशी वस्तुओं का आदर नहीं होगा तो और कहाँ होगा? अंग्रेज़ों की दासता ने भारतीयों को मनोवृत्ति ऐसी बना दी कि आज बड़ा-से-बड़ा राष्ट्रीय नेता भी राष्ट्रीयता के इस निर्मल स्वरूप को समझने में असमर्थ है। और विदेशी भाषा और विदेशी वस्तुओं का प्रयोग करते हुए उसके मन में तनिक भी राष्ट्रीय अपमान की अनुभूति नहीं होती।

आर्यसमाज उद्योगीकरण का विरोधी नहीं है। ऋषि दयानन्द ने अपने पट्ट शिष्य, क्रान्तिकारियों के पितामह श्री श्यामजीकृष्ण वर्मा को भारत में (ब्यावर में) सबसे पहली कपड़ा-मिल का मैनेजर बनने की अनुमति दी थी और बाद में विज्ञान के अध्ययन के लिए उन्हें विदेश भेजा था। श्यामजी कृष्ण वर्मा ने ऋषि दयानन्द के परामर्श से, विदेश जाने वाले भारतीय छात्रों को जहाँ क्रान्ति के मन्त्र से अभिमन्त्रित किया था वहाँ उनके लिए विज्ञान पढ़ने में निमित्त अन्य सुविधाओं की भी व्यवस्था की थी। जर्मनी के विशेषज्ञों से ऋषि दयानन्द ने इस विषय में पत्र-व्यवहार भी किया था कि वे भारतीय छात्रों को विज्ञान और शिल्प सिखाने की व्यवस्था करें। परन्तु देश का औद्योगीकरण करने की तीव्र इच्छा होते हुए भी, ऋषि दयानन्द का उद्देश्य केवल यही नहीं था कि

देश में बड़े-बड़े कल-कारखाने स्थापित हों, प्रत्युत छोटे उद्योगों और कुटीर उद्योगों के भी वे पक्षपाती थे, क्योंकि इनके बिना न ग्रामीण अर्थव्यवस्था सुधर सकती है और न ही स्वदेशी वस्तुओं का विकास हो सकता है। जहाँ तक हम समझते हैं, ऋषि दयानन्द विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था के पक्षपाती थे और उद्योगों के पूँजीपतियों के कुछ हाथों में समस्त आर्थिक शक्ति दे देना उनकी कल्पना के विरुद्ध था।

स्वदेशी और विकेन्द्रीकरण का समर्थक होते हुए भी प्रत्येक उद्योग और व्यवसाय के राष्ट्रीयकरण का ऋषि दयानन्द समर्थन करते, इसमें हमें सन्देह है। पूँजी किसी एक स्थान पर संचित नहीं होनी चाहिए, तो समस्त पूँजी का मालिक सरकार को ही बना देना क्या पूँजी का एक स्थान पर ही सन्निवेश नहीं है? ऐसा करने से जहाँ लोगों में उत्पादन बढ़ाने की प्रेरणा (Incentive) समाप्त हो जाएगी, वहाँ सरकार में भी तानाशाही की प्रवृत्ति बढ़ेगी। समाजवादी अर्थव्यवस्था इस सीमा तक तो उपयोगी है कि राष्ट्र की सम्पत्ति किसी एक व्यक्ति के उपभोग के बजाय समस्त समाज के उपभोग में आए, किन्तु जब इस सिद्धान्त को भी अति तक पहुँचाया जाता है तब व्यक्ति समाप्त हो जाता है और केवल समाज रह जाता है। परन्तु क्या व्यक्ति के समाप्त हो जाने पर समाज टिक सकेगा? समाज भी तो आखिर व्यक्तियों का समुदाय ही है। इसीलिए आदर्श अर्थव्यवस्था वही हो सकती है जिसमें "सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझने वाले" व्यक्तियों का स्थान हो।

जिस तरह शारीरिक स्वास्थ्य के लिए रक्त-संचार (Circulation of blood) का होना आवश्यक है, उसी प्रकार समाज के आर्थिक स्वास्थ्य के लिए धन का संचार (Circulation of wealth) होना आवश्यक है। किसी एक स्थान पर पूँजी का जमा हो जाना अपने-आप में दोष नहीं है, परन्तु यदि उस पूँजी की निकासी न हो तो उसमें वैसी ही सड़ाँध पैदा हो जाएगी जैसी एक स्थान पर एकत्रित तालाब के उस पानी में, जिसमें कही पानी की निकासी की गुंजायश न हो। यही हमें महात्मा गांधी का 'ट्रस्टीशिप' का सिद्धान्त याद आता है, अर्थात् हरेक पूँजीपति यह समझे कि मेरे पास विद्यमान सारी सम्पत्ति मेरे निज के या परिवार के उपयोग के लिए नहीं है, अपितु सारे समाज के उपयोग के लिए है और यह सारी सम्पत्ति समाज की है, समाज ने मुझे उस सम्पत्ति का केवल 'ट्रस्टी' (न्यासी) बनने का ही अधिकार दिया है, अर्थात् समाज मेरी इस योग्यता को समझता है कि मैं सम्पत्ति को बढ़ाने के उपाय जानता हूँ कि समाज के हित के लिए उस सम्पत्ति का सदुपयोग कैसे किया जाय। जब समाज ने मुझ पर इतना विश्वास किया है तब मैं समाज के साथ विश्वासघात क्यों करूँ? यदि कोई पूँजीपति अपने पास एकत्रित पूँजी का केवल अपने लिए उपयोग करता है तब समाजद्रोही है और कृतघ्नता के पाप का भागी है। "शत हस्त समाहर, सहस्र हस्त संकिर"-सौ हाथों से कमा और हजार हाथों से दे-यही वैदिक आदर्श है।

आर्यसमाज ने अपनी ओर से किसी भी विषय में कोई नई स्थापना नहीं की, केवल वेद-प्रतिपादित सिद्धान्तों को ही बुद्धि-संगत ढंग से उजागर करने का प्रयत्न किया है। किसी भी विषय में वेद जो कुछ कहता है वही आर्यसमाज को मान्य है और वेद का सिद्धान्त किसी जाति-विशेष या देश-विशेष या काल-विशेष के लिए नहीं; वह सब जातियों, सब देशों और सब कालों के लिए है, इसलिए उसी का अनुगमन करने से विश्व का कल्याण हो सकता है।

- समाप्त -

सफल जीवन के तीन अंग

यद्यपि जीवन को सफल बनाने के लिए अनेक सहायक तत्वों की आवश्यकता है, तो भी तीन तत्व ऐसे हैं जिनमें से किसी एक के अभाव में जीवन एक ऐसे स्तर को प्राप्त हो सकता है, जहाँ वस्तुत: जीवन विकास की ओर अग्रसर होने के स्थान पर ह्रास की ओर चल पड़ता है। जीवन को सफल बनाने वाले ये तीन तत्व है-अर्थ (धन), स्वास्थ्य और आचरण (चरित्र)। अंग्रेजी भाषा में इन्हें क्रमश: wealth, health, और character कहते हैं। जीवन-विकास के लिए इन तीनों महत्वपूर्ण तत्वों में से किसी एक तत्व के अभाव में सफल जीवन की कल्पना कदापि नहीं की जा सकती। ये तीनों तत्व अन्योन्याश्रित एवं एक-दूसरे के पूरक हैं। इस त्रिक अर्थात्

शरीर और आत्मा के संयोग का नाम ही 'जीवन' है। यह शरीर, जिसमें चेतन आत्मा के संयोग से गति प्राप्त होती है, अग्नि, जल, वायु, आकाश एवं पृथ्वी-इन पाँच भौतिक (जड़) तत्वों संघात् का परिणाम है। और इस संघात् में 'पृथ्वी' तत्व का सर्वाधिक योग है। पृथ्वी का अधिक भाग होने के कारण इसका पालन-पोषण भी मुख्यत: पृथ्वी तत्व से ही होता है। इस पृथ्वी को 'वसुंधरा' भी कहा जाता है। 'वसुंधरा' का अर्थ है-वसु अर्थात् धन को धारण करने वाली। दूसरी ओर शरीर को प्राय: पार्थिव (पृथ्वी तत्व से निर्मित) भी बताया जाता है। जब शरीर पार्थिव है और पृथ्वी 'वसु' अर्थात् जीवन को बसाने वाले 'धन' को धारण करने वाली है, तो इससे यह स्पष्ट सिद्ध हो जाता है कि शरीर को धारण और पालन-पोषण करने वाला महत्वपूर्ण तत्व 'धन' (wealth) है, और यह पार्थिव शरीर जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है।

इस समस्त विवेचन से यह सिद्ध होता है कि मानव-जीवन के विकास के लिए 'धन' एक अनिवार्य तत्व है। धन के अभाव में जीवन की गाड़ी चल नहीं सकती, क्योंकि जीवन के पोषक तत्व धन से ही उपलब्ध किये जा सकते हैं, अन्यथा नहीं। मनुष्य को उदरपूर्ति के लिए धन की आवश्यकता है; शरीर की नग्नता को ढाँपने के लिए धन चाहिये; यहाँ तक कि शेभा-सम्मान के लिए भी धन चाहिये। संसार भर में ऐसे किसी भी क्षेत्र की कल्पना नहीं की जा सकती जहाँ धन की आवश्यकता न हो। जीवन में धन की उपादेयता के विस्तृत क्षेत्र को दृष्टि में रखते हुए श्री भर्तृहरि ने यहाँ तक घोषणा कर दी थी कि "धनवान् ही कुलीन है, धनसम्पन्न व्यक्ति ही पण्डित है, विद्वान् है, गुणज्ञ और वक्ता है, एवं रूपवान है, धन से ही सब गुणों को आश्रय मिलता है"-**सर्वेगुणा: कांचनमाश्रयन्ति**। महाभारत के रचयिता महर्षि व्यास ने तो यहाँ तक कह दिया-'पुरुषाऽधनं वध:'-धन का न होना मनुष्य की मृत्यु हैं

अत: धनोपार्जन मनुष्य का धर्म है; क्योंकि धन के अभाव में जीवन का क्रिया-कलाप चल ही नहीं सकता। धन जीवन-यापन का अनिवार्य एवं मुख्य साधन है। किन्तु यह नहीं भूल जाना चाहिये कि धन जीवन-विकास का 'साधन है, साध्य नहीं'। जीवन-विकास के लिए धन को ही सब कुछ मान बैठना श्रेयस्कर नहीं। धन से श्रेष्ठ और महत्वपूर्ण, जो जीवन को धारण करता है, वह है 'स्वास्थ्य' अर्थात् नीरोगता। *(क्रमश:)*

-गुरुचरण दास (भूतपूर्व उपप्रधान)

जुलाई 2013 मास में साप्ताहिक सत्संग

दिनांक	वक्ता	विषय
07	आचार्य वीरेन्द्र विक्रम	आध्यात्मिक प्रवचन
14	श्री नरेश सोलंकी	भजन
21	श्री वेद कुमार वेदालंकार	यज्ञ का महत्व (क्रमश:)
28	आचार्य सुभाष	प्रवचन का महत्व

जून मास में प्राप्त दान राशि:—

नाम	राशि	नाम	राशि	नाम	राशि
श्रीमती वीरेन्द्र सूद	11,000/-	श्रीमती रेणू शर्मा	600/-	श्री हंस राज कपूर	500/-
श्री सुशील जौली	1,000/-	श्री शिव अबरोल	500/-	श्री वेद कुमार वेदालंकार	500/-

जून माह में पुरोहितों द्वारा एकत्रित धनराशि :

❖ श्री वेद कुमार वेदालंकार ------ ❖ आचार्य वीरेन्द्र विक्रम ₹ 11,000/-

सम्पादक :
विजय लखनपाल

महानता की आकांक्षा करने में ही हमारी आत्मा की सर्वोत्कृष्ट शक्तियों का विकास निहित है।

Free Awareness & Early Detection of Cancer

CAMP

1st Wednesday of Every month

10:00 to 1:00 PM

at

MAHARSHI DAYANAND MEDICAL CENTRE

Courtesy

DHARAMSHILA HOSPITAL AND RESEARCH CENTRE

Free Clinical Examination & DRE

Special discount for PAP SMEAR, FNAC, PSA & Mammography

MAHARSHI DAYANAND MEDICAL CENTRE

Arya Samaj Kailash–Greater Kailash–I (Regd.), New Delhi-110048 Tel.: 29240762, 29247544

Free Eye Checkup Camp

EVERY WEDNESDAY & SATURDAY

Timings : 10:00 am to 1:00 pm

By

Dr. DEEPA KAPOOR (M.S.)

प्रवेश आरम्भ ! प्रवेश आरम्भ ! प्रवेश आरम्भ !

आर्य शिशु शाला

आर्य समाज कैलाश–ग्रेटर कैलाश–1, नई दिल्ली–110048 फोन : 011–46593498, 9350071114

प्रवेश आरंभ है :–

प्ले स्कूल से के.जी. 1 से 8वीं तक

कक्षा 12वीं तक के लिए
दिल्ली प्रशासन द्वारा अनुमति मिल गई है।

उपलब्ध सुविधाएँ

❖ सुव्यवस्थित कक्षाएँ ❖ साफ व हरा भरा वातावरण ❖ कम्प्यूटर व विज्ञान

❖ सुशिक्षित व अनुभवी व्यवस्थाएँ प्ले स्कूल से के.जी. कक्षाओं तक आधुनिक व नैतिक शिक्षा ❖ उचित फीस

अपने बच्चों के मानसिक व बौद्धिक विकास हेतु प्रवेश कराएँ।